व्यवहारनय छोड़े तो निश्चय का एकांत हो जाता है, निश्चय छोड़े तो व्यवहार का एकांत व्यवहाराभासी हो जाता है। क्या करें? समझ में आया नहीं कि व्यवहार-निश्चय क्या है? हमें तो दोनों को अंगीकार करना। भगवान ने दो नय कहे हैं, भगवान ने कहा है कि नहीं? मुनियों ने कहा है कि नहीं? देखो, कुन्दकुन्दाचार्य महाराज धर्मधोरी, उन्होंने भी व्यवहारनय कहा है। कौन ना कहता है? सुन तो सही। क्या कहा है?

भगवान आत्मा अपना शुद्ध चिदानंद स्वरूप, अनुभव दृष्टि सम्यग्दर्शन प्रगट करे वह निश्चय है। उसका आश्रय लिया है। और उसमें राग भक्ति आदि भाव, साधर्मी प्रति प्रेम, प्रभावना ऐसा राग होता है। वह जानना कि इस भूमिका में ऐसा है। उसका नाम व्यवहार है। व्यवहार आदरणीय है और निश्चय आदरणीय है, ऐसी दो बात तो भगवान ने कभी कहीं नहीं कही। समझ में आये नहीं कि क्या करना? दोनों लेना, दोनों मानना।

'**दो नय कहे हैं उनमें से किसी को छोड़ा भी नहीं जाता, इसलिये भ्रमसहित दोनों का साधन साधते हैं,...**' भ्रमणा से। देखो! साधन यानी निश्चय का भी साधन साधे, व्यवहार का भी साधे। दो का साधन होता नहीं। दो का साधन होता नहीं, साधन एक होता है--अंतर निश्चय का। और राग आये वह जानने लायक है। साधन दो का नहीं होता, साधन एक का होता है। दोनों साधन साधें तो अपने दोनों नयों को माना कहा जाय, ऐसा करके माने, लेकिन वस्तु की खबर नहीं है। क्यों नहीं है उसकी विशेष बात करेंगे...

(श्रोता :-- प्रमाण वचन गुरुदेव!)

श्रावण वद-२, शुक्रवार, दि. १७-८-१९६२,
सातवाँ अधिकार, प्रवचन नं. ९

यह मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अध्याय, उसमें दो नय के अवलम्बनवाले का कथन है। निश्यनय का क्या स्वरूप है और व्यवहारनय का क्या स्वरूप है, उसे जाने बिना दोनों का अवलम्बन का हम साधन करते हैं, ऐसा माननेवाला मिथ्यादृष्टि है। उसका कथन चलता है। समझ में आया? जैनमत में दो नय कहे हैं, जैनमत में दो है न?

दूसरे में कहा है, लेकिन वह साधारण परमार्थ और व्यवहार उपचार की बात की है। वीतराग अभिप्राय में दो नय का कथन चला है। संप्रदाय में दिगंबर में जन्म हुआ फिर भी... उसकी बात चलती है। दिगंबर में जन्म हुआ उसकी बात। जन्म होनेपर भी निश्चय क्या, व्यवहार क्या, हमें तो दोनों नय का साधन साधना। क्योंकि दो नय जैनमत में तो चली है। तो भ्रमणा से निश्चय का भान बिना और व्यवहार किसको कहते हैं उसका ज्ञान बिना दोनों का साधन साधना, ऐसा माननेवाला मिथ्यादृष्टि है। '**इसलिये भ्रमसहित दोनों का साधन साधते हैं; वे जीव भी मिथ्यादृष्टि जानना।**' ओहो..! दो नय का साधन करना। दो नय है कि नहीं? आता है, देखो!

'**अब इनकी प्रवृत्ति का विशेष बतलाते हैं :-- अंतरंग में आपने तो निर्धार करके निश्चय-व्यवहार मोक्षमार्ग को पहिचाना नहीं,...**' दिगंबर में जन्म हुआ उसको लागू पड़ता है। श्वेतांबर आदि को तो यहाँ अन्य मत में डाल दिया है, पंचम अध्याय में। दिगंबर में जन्मने के बावजूद, निश्चय का क्या स्वरूप, व्यवहार का क्या स्वरूप जाने बिना हम दोनों नय मानते हैं, दोनों नय मानते हैं और हम दोनों नय का साधन करते हैं। दोनों नय हम अंगीकार करते हैं। ऐसा माननेवाले की दृष्टि में क्या है? '**अंतरंग में आपने तो निर्धार करके निश्चय...**' क्या निश्चय मेरा अखण्ड गुणस्वरूप, मेरा आत्मा अनंत गुण का पुंज उसका आश्रय करे जो सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र प्रगट हो, उसको निश्चय कहते हैं। इसका तो निर्धार है नहीं, नक्की है नहीं, जैसा कहा वैसा कल्पना से मान ले कि हम तो निश्चय मानते हैं। सिद्ध समान हमारा स्वरूप है। हमारी पर्याय में मलिनता-फलिनता है नहीं। ऐसा निश्चय को सत्यार्थ निर्धार किये बिना निश्चय को मानते हैं।

और व्यवहार, वह भी निर्धार करते नहीं कि व्यवहार किसको कहना। समझ में आया? अन्दर में आत्मा में निश्चय का भान होने के बाद अथवा निश्चय का भान के साथ में दया, दान, व्रत, भक्ति का राग आता है उसको जानना उसका नाम व्यवहारनय है। ऐसा तो निर्धार करते नहीं, नक्की करते नहीं। और दोनों '**मोक्षमार्ग को पहिचाना नहीं, जिनआज्ञा मानकर...**' वीतराग दो नय कहते हैं तो दो नय को हमारे मानना (है)। क्योंकि एक नय छोडेंगे तो एकांत हो जायेगा।

मुमुक्षु :-- ...

उत्तर :-- वह तो दूसरी बात है। दो नय को छोड़ना नहीं उसका अर्थ--निश्चय है तत्त्व का स्वरूप है उसको यदि छोड़ेगा तो तत्त्व का नाश हो जायेगा और व्यवहार बीच में गुणस्थानभेद--चौथी, पाँचवी, छठवी भूमिका और राग का प्रकार है ऐसा तो जैसा है वैसा न जाने, तो व्यवहार छोड़ा ऐसा कहने में आता है। आदरणीय है ऐसी

बात नहीं। जिनमत प्रवर्तः जिनमत को प्रवर्ताना चाहते हो तो दोनों नय नहीं छोड़ना, उसका अर्थ क्या? कि यदि निश्चय छोड़ेगा तो तत्त्वदृष्टि नहीं रहेगी और व्यवहार छोड़ेगा तो बीच में भेद आता है गुणस्थान में, सम्यग्दर्शन, श्रावकपना, मुनिपना राग की मंदता और तीव्रत, पहले तीव्र बाद में मंद, ऐसे पहले शुद्धि की मंदता, फिर वृद्धि ऐसा जो भेद पड़ता है वह व्यवहारनय का विषय है। उसको छोड़े तो गुणस्थानभेद रहता नहीं, तीर्थ रहता नहीं। आदरणीय नहीं। समझ में आया?

निश्चय का क्या स्वरूप है, जानते नहीं। व्यवहार किसको कहते हैं, जानते नहीं और हम दोनों नय का साधन करते हैं। दोनों को हम अंगीकार करते हैं। तो कहते हैं कि, '**जिनआज्ञा मानकर...**' निर्धार किये बिना, निश्चय किया नहीं। '**जिनआज्ञा मानकर निश्चय-व्यवहाररूप मोक्षमार्ग दो प्रकार मानते हैं।**' यहाँ तो मोक्षमार्ग का लिया है न। मोक्षमार्ग दो प्रकार का मानते हैं। अज्ञानी निश्चय-व्यवहार का निश्चय निर्धार क्या चीज है उसका प्रबोध-बोध हुए बिना, बस, जिनाज्ञा हमारे तो, जिनाज्ञा दो नय की है, तो नय का दो मोक्षमार्ग है। कुन्दकुन्दाचार्य पंचास्तिकाय में कहते हैं, जीव धम्मादि सद्णं... समझ में आया? और आत्मा की श्रद्धा वह निश्चयश्रद्धा और व्यवहार दोनों मोक्षमार्ग है। आर्ष में आचार्यों ने कहा है तो हमें दोनों मानना। समझ में आया? ऐसे जिनआज्ञा मानकर निश्चय नाम सत्यार्थ मोक्षमार्ग क्या है, व्यवहार नाम उपचार क्या है उसको जाने बिना मोक्षमार्ग दो प्रकार का मानते हैं।

'**सो मोक्षमार्ग दो नहीं है,...**' मोक्षमार्ग दो नहीं है। ओहोहो..! नहीं, टोडरमल घर का कहते हैं। हमारे तो आर्षवाक्य में दो मोक्षमार्ग चलता है, कुछ लोग ऐसा कहते हैं। अरे.. भगवान! गाथा का आधार पहले दिया। आचार्य ही कहते हैं कि व्यवहार अभूतार्थ है। जिसको मोक्षमार्ग व्यवहार से कहा, वह अभूतार्थ है, असत्यार्थ है, व्यवहारमोक्षमार्ग मोक्षमार्ग है नहीं। ऐसा तो ११वीं गाथा में (कहा)। जैनशासन का प्राण ११वीं गाथा है। समझ में आया? '**ववहारोऽभूदत्थो**' व्यवहार अभूतार्थ, असत्यार्थ, असत्य अर्थ को प्रगट करती है और शुद्धनय सत्यार्थ को, सत्य को, सत्य भाव को, सत्य अर्थ को प्रगट करती है। इस एक गाथा के पहले दो पद में पूरे शासन की तात्पर्य क्या चीज है, उस गाथा से उसका तात्पर्य निकलता है। समझ में आया?

दो मोक्षमार्ग मानते हैं। '**सो मोक्षमार्ग दो नहीं है,...**' मोक्षमार्ग दो नहीं है। बराबर है? दो मोक्षमार्ग नहीं है? तो क्यों कहा? आचार्यों ने क्यों कहा? और पुरुषार्थसिद्धि उपाय में भी दो मोक्षमार्ग चला है और दोनों मोक्षमार्ग से मोक्ष होता है ऐसी गाथा है। समझ में आया? वह तो कहते हैं कि जो निश्चय मार्ग है वही यथार्थ और सत्य है। बीच में देव-गुरु-शास्त्र की श्रद्धा का राग, पंच महाव्रत का परिणाम, ग्यारह अंग

का बोध आदि, जो व्यवहार विकल्प उठते हैं उसको जानना, उस काल में जानना कि है, व्यवहारमोक्षमार्ग है। यानी कि व्यवहारमोक्षमार्ग है नहीं। समझ में आया? '**सो मोक्षमार्ग दो नहीं है, मोक्षमार्ग का निरूपण दो प्रकार है।**' मोक्षमार्ग का कथन दो प्रकार से है, उसकी कथनी का दो प्रकार है, उसका निरूपण का दो प्रकार है। परन्तु मार्ग दो है ऐसा नहीं। समझ में आया?

'**निरूपण दो प्रकार है।**' निरूपण नाम कथन। उसकी कथनी दो प्रकार की है, मार्ग दो प्रकार का है ऐसा नहीं। अब कथनी का प्रकार क्या है? '**जहाँ सच्चे मोक्षमार्ग को मोक्षमार्ग निरूपित किया जाय सो 'निश्चय मोक्षमार्ग' है।**' ये सब महासिद्धांत हैं। जहाँ सत्य मोक्षमार्ग अपना शुद्ध चैतन्यद्रव्य अखण्ड पूर्णानंद, उसका अंतर्मुख होकर निर्विकल्प सम्यग्दर्शन की प्रतीति, सम्यग्दर्शनरूप प्रतीति, सम्यक् स्वसंवेदनरूप आत्मा का ज्ञान और आत्मा के स्वरूप में रमणता करना वह निश्चयचारित्र, वही सच्चा मोक्षमार्ग है, उसको मोक्षमार्ग कथन करना उसका नाम निश्चय है। समझ में आया?

'**और जहाँ जो मोक्षमार्ग तो है नहीं,...**' आहाहा..! व्यवहार कहता है ऐसा है नहीं। व्यवहार कहता है कि देव-गुरु-शास्त्र की श्रद्धा, भक्ति, पूजा और ग्यारह अंग का ज्ञान, अट्ठाइस मूलगुण का पालन उसको हम व्यवहारमोक्षमार्ग व्यवहारनय से कहते हैं। उसका अर्थ व्यवहार कहता है कि मोक्षमार्ग है, निश्चय कहता है कि नहीं है। वह तो बन्ध का मार्ग को व्यवहारनय मोक्षमार्ग आरोप से कहती है। वस्तु ऐसी है नहीं। समझ में आया? टोडरमल तो व्यवहार और निश्चय निश्चय से कहते हैं। कहाँ गये चंदुभाई? पत्र दिया कि नहीं मधुकर ने? तो क्यों बात नहीं करते हैं? द्रव्यसंग्रह में व्यवहारमोक्षमार्ग इसप्रकार चला है और निश्चय इसप्रकार चला है। ऐसा सब आया है। समझ में आया?

क्या कहते हैं? भैया! व्यवहारमोक्षमार्ग जो कहा है वह मोक्षमार्ग है तो नहीं, परन्तु मोक्षमार्ग अपना शुद्ध स्वरूप, उसकी श्रद्धा, ज्ञान और रमणता की निर्विकल्प परिणति, निर्विकल्प निर्विकारी दशा सो निश्चयमोक्षमार्ग (है)। और मोक्षमार्ग में निमित्त है, निमित्त है। शुद्ध उपादान की अपनी परिणति है सो निश्चयमोक्षमार्ग है। समझ में आया? शुद्ध आत्मा पूर्णानंद प्रभु अखण्ड गुण की एक पूरी चीज, उसका आश्रय करके जो सम्यग्दर्शन--निर्विकल्प प्रतीति होती है, उसका आश्रय से आत्मज्ञान उत्पन्न होता है, उसमें लीनता, लीनता वीतरागता होती है। वह निश्चय परिणति आत्मा का सच्चा मोक्षमार्ग (है)। समझ में आया? वह मोक्षमार्ग में निमित्त है, निमित्त है। कौन? व्वयहार निमित्त है। उसका अर्थ, वह आत्मा के निश्चय मोक्षमार्ग में अकिंचित्कर है। समझ में आया? जैसा निमित्त पर चीज में कुछ कार्यकारी नहीं, तो उसको निमित्त कहने

में आता है। समझ में आया? शेठी! इतने साल यूँ ही गँवा दिये। तुम्हारी बात करते हैं। कहते हैं कि जैन में दिगंबर में जन्म लिया, लेकिन निश्चय-व्यवहार क्या उसका निर्धार किया नहीं। चलो, मानते हैं हम तो, दो मोक्षमार्ग मानते हैं, दो मोक्षमार्ग मानते हैं। पुराना खानदान है दिगंबर का। समझ में आया?

तो कहते हैं कि '**मोक्षमार्ग तो है नहीं,...**' और निश्चयमोक्षमार्ग में निमित्त है, निमित्त है। क्या? देव-गुरु-शास्त्र की श्रद्धा का राग, पंच महाव्रत का राग और ग्यारह अंग का पर तरफ का झुकाव का ज्ञान रागमिश्रित, वह सब निश्चयमोक्षमार्ग की अंतर निर्विकारी परिणति, परिणति नाम पर्याय, पर्याय नाम दशा वीतराग श्रद्धा, ज्ञान और रमणता सो निश्चय, सच्चा मोक्षमार्ग, सत्य मार्ग, यथार्थ मार्ग, उसी मार्ग से मुक्ति होती है। उस मार्ग में निमित्तरूप पड़ता है, व्यवहार रत्नत्रय का विकल्प। व्यवहार रत्नत्रय का विकल्प--राग निमित्त है '**व सहचारी है।**' क्या? निश्चयमोक्षमार्ग की अंतर परिणति चलती है, उसकी सहचारी--साथ-साथ में ऐसा राग होता है। व्यवहाररत्नत्रय देव-गुरु-शास्त्र की श्रद्धा का राग आदि साथ में सहचर, सहचर--साथ-साथ उनके कारण से वह चलता है। अपने कारण से अपनी निर्विकल्प परिणति चलती है और राग के कारण से राग भी सहचर निश्चय के साथ चलता है। समझ में आया?

एक आदमी चलता हो तो चलता तो है अपने पैर से, लेकिन सहचर.. क्या कहते हैं तुम्हारे में? सथवारो, सथवारा--साथी, साथी अपने कारण से चलता है और वह चलनेवाला अपने कारण से चलता है। ऐसे अपना शुद्ध प्रभु आत्मा, शरीर-वाणी-मन की क्रिया मेरी नहीं, पुण्य-पाप का विकल्प भी मैं नहीं, मैं निर्विकल्प शुद्ध आत्मा हूँ, मैं ज्ञायकभाव हूँ, परम अखण्ड परम स्वभावभाव हूँ, ऐसी अंतर्मुख होकर आत्माभिमुख होकर परिणाम जो निर्मल शुद्ध श्रद्धा, ज्ञान, रमणता निश्चयमोक्षमार्ग है। साथ में--सहचर, सहचर--साथ में रहनेवाला। साथ में रहनेवाला दोनों एक नहीं (है)। दोनों एक है? एक नहीं है। निश्चय में व्यवहार नहीं और व्यवहार में निश्चय नहीं। नहीं तो दो प्रकार की कथनी चले नहीं। समझ में आया?

'**मोक्षमार्ग का निमित्त है व सहचारी है...**' साथ में चलनेवाला है। '**उसे उपचार से...**' उपचार से, आरोप से '**मोक्षमार्ग कहा जाय...**' उस राग को मोक्षमार्ग कहा जाय, भेद को मोक्षमार्ग कहा जाय, निमित्त नाम व्यवहार रत्नत्रय का विकल्प उत्पन्न हुआ, उस निमित्त को मोक्षमार्ग कहा जाये। वह सहचर रहता है तो साथ में रहनेवाले को, वह मोक्षमार्ग परिणति चलती है (तो) साथ में रहनेवाले को मोक्षमार्ग कहा जाय '**सो 'व्यवहार मोक्षमार्ग' है।**' है नहीं, परन्तु निमित्त को देखकर, सहचारी देखकर उपचार से उसको व्यवहार मोक्षमार्ग का आरोप कहने में आया। समझ में आया?

निश्चय-व्यवहार का तो बहुत झघड़ा चलता है। कोई कहता है कि व्यवहार हो तो निश्चय होता है, कोई कहता है कि चौथे से बाहरवे तक व्यवहार मोक्षमार्ग है, तेरहवें में निश्चयमोक्षमार्ग प्रगट होता है। वह परमानन्द आदि था, वह निकल गया, क्षुल्लक था न पहले, आर्य समाज, वह कहता है कि सातवें.. पहले तो बारहवे में कहता था, फिर (कहता था), छठवे में व्यवहारमोक्षमार्ग है, निश्चय तो सातवें में होता है। अभेद तीन हो तब निश्चय होता है। अनेक कथनी, जगत अपना सत्य और उपचार क्या है समझे बिना अनेक मान्यता चली है।

भगवान आचार्य कहते हैं, उसका रहस्य खोलते हैं, पंडितजी टोडरमल उसका रहस्य खोलते हैं कि शास्त्र में दो प्रकार की कथनी चली है, निरूपण चला है। निश्चय को यथार्थ सच्चा मोक्षमार्ग कहना और राग को सहचर देखकर उसको उपचार से, आरोप से व्यवहार कहना जो कि मोक्षमार्ग है ही नहीं, है तो बन्धमार्ग, परन्तु मोक्षमार्ग के साथ में निमित्त देखकर मोक्षमार्ग का आरोप दे दिया। समझ में आया? बहुत कठिन यह। लोगों ने बाहर से यह माना हो उसको ऐसा लगे कि यह तो सब डूब जायेगा। बाबुभाई! व्यवहार करते-करते निश्चय हो, व्यवहार हो तो निश्चय हो, यहाँ तो कहते हैं कि निश्चय है तो व्यवहार है ऐसा भी नहीं, व्यवहार है तो निश्चय है ऐसा भी नहीं। सहचर अपने-अपने कारण से दोनों है। एक यथार्थ है और एक निमित्त से उपचार से मोक्षमार्ग कहा है। बराबर है?

'**क्योंकि निश्चय-व्यवहार का सर्वत्र ऐसा ही लक्षण है।**' महासिद्धांत देखो! इसलिये निश्चय और व्यवहार का सर्वत्र ऐसा ही लक्षण है। क्या? कि निश्चय वस्तु की परिणति वह निश्चय और साथ में राग आया वह व्यवहार। तो दर्शन का भी दो प्रकार--सम्यग्दर्शन निर्विकल्प आत्मा की प्रतीति होनी वह निश्चय और बीच में राग आया नव तत्त्व की श्रद्धा का, वह व्यवहार। ज्ञान--आत्मा का ज्ञान सम्यक् हुआ वह निश्चय, शास्त्र का ज्ञान परसन्मुख हुआ वह व्यवहार। चारित्र--अपने स्वरूप में रमण करना वह निश्चय और पंच महाव्रत या अट्ठाईस मूलगुण का विकल्प आया वह व्यवहार। समिति,... यह सर्वत्र है न सर्वत्र? समझ में आया?

समिति, दो प्रकार की समिति की कथनी चली है। एक निश्चयसमिति, व्यवहारसमिति। निश्चयसमिति--अपना शुद्ध स्वरूप में सम्यक् प्रकार से इति प्रवृत्ति, परिणति। वीतराग परिणति अपने में हो वह निश्चयसमिति। और पर जीव को दुःख न हो ऐसा विकल्प उठता है वह व्यवहारसमिति। निश्चय के साथ में व्यवहार रहता है, सहचर है ऐसा देखकर उसको व्यवहारसमिति कहेने में आया।

मुमुक्षु :-- दोनों की मैत्री है।

उत्तर :-- दोनों की मैत्री व्यवहारनय से है। ठीक है, पंडित धीरे से अपना विचार रखते हैं। व्यवहारनय से मैत्री कहने में आता है, परमार्थ से मैत्री नहीं, दोनों विरूद्ध है। हाँ कही, मानों दोनों की मैत्री हो। समझ में आया? वह तो व्यवहारनय से प्रवचनसार में व्यवहारनय से, उपचार से निश्चय के साथ व्यवहार है उसको व्यवहार से मैत्री कहने में आता है। निश्चय से वैरी है। समझ में आया? इस मैत्री का कथन भी दो प्रकार का है। समझ में आया? एक स्वरूप की रमणता अन्दर मैत्री वह निश्चयमैत्री आत्मा की और साथ में राग आता है उसमें व्यवहारमैत्री का उपचार सहचर देखकर आरोप आता है। मैत्री है नहीं उसको मैत्री कहना उसका नाम व्यवहार है। समझ में आया? ...भाई!

मुमुक्षु :-- ...

उत्तर :-- कहा न, जो मोक्षमार्ग नहीं है उसको मोक्षमार्ग कहना उसका नाम व्यवहार। ऐसे मैत्री नहीं उसको व्यवहार से मैत्री कहना उसका नाम व्यवहार। समझ में आया? ऐसे दर्शन, ज्ञान, चारित्र, समिति, गुप्ति का दो प्रकार की कथनी।

एक शुभाशुभ विकल्प से अपने स्वरूप में गुप्त होकर निर्विकारी शांति का स्वाद लेना वह निश्चयगुप्ति। परन्तु साथ में अशुभ से हटकर शुभ में आया वह व्यवहारगुप्ति। है नहीं, व्यवहारगुप्ति वह गुप्ति है नहीं। परन्तु निमित्त सहचर देखकर उपचार से गुप्ति का आरोप राग में करने में आया है। समझ में आया?

ऐसे ध्यान (का) दो प्रकार। ध्यान की कथनी दो प्रकार (की)। एक, भगवान आत्मा शुद्ध चैतन्य में एकाग्र होकर अमृत का स्वाद का अनुभव करता है वह निश्चयध्यान, वह निश्चय धर्मध्यान और साथ में विकल्प उठते हैं, भगवान क्या कहते हैं, क्या है, संसार क्या? वह शुभराग निश्चय धर्मध्यान के साथ में सहचर देखकर निमित्त देखकर उपचार से उसको धर्मध्यान कहा। है नहीं धर्मध्यान उसको धर्मध्यान कहना उसका नाम व्यवहार। समझ में आया? देखो यह लक्षण।

'**क्योंकि निश्चय-व्यवहार का सर्वत्र ऐसा ही लक्षण है।**' सर्वत्र ऐसा ही लक्षण है। कायोत्सर्ग, कायोत्सर्ग दो प्रकार की कथनी। वस्तु एक, कथन दो। आत्मा शरीर, वाणी, मन और कार्माण शरीर से हटकर और राग से हटकर कायोत्सर्ग, विकल्प है वह भी काया है, कर्म की काया भावकर्म, समझ में आया? भावकर्म का शुभराग वह विकार की काया, उससे हटकर निर्विकल्प चैतन्य में एकाकार योग होकर स्थिर होना वह निश्चय कायोत्सर्ग है। साथ में विकल्प उठता है कि मैं कायोत्सर्ग करुँ और ऐसा हो, वैसा हो, वह साथ में राग को सहचर देखकर उपचार से कायोत्सर्ग कहा है। समझ में आया?

ऐसे योग, योग। योग कहते हैं न, आत्मा में जोड़ाण। योग भी अपना स्वरूप में निर्विकल्प जोड़ाण होना उसका नाम सच्चा योग है। विकल्प उठते हैं वह व्यवहार योग है, पुण्यबन्ध का कारण है। ऐसी कथनी दो प्रकार की चलती है। समझ में आया? ऐसे सम--समता, समता। दो प्रकार की कथनी चलती है। एक आत्मा में पुण्य-पाप का राग रहित स्वभाव की समता प्रगट हो वह निश्चयसमता है और साथ में राग की मंदता का क्षमा का शुभ भाव हो वह व्यवहारसमता है। समता एक ही है, समता की कथनी दो प्रकार की चलती है। समझ में आया? धन्नालालजी!

मैंने तो बहुत बोल लिये हैं, इसमें है न? नियमसार। नियमसार में तो इतने बोल लिये हैं, बहुत बोल लिये हैं। समझे? सम, नियम, मैत्री, दया बहुत आते हैं उसमें। सब में दो-दो प्रकार लेना। चार आराधना। आराधना के भी दो प्रकार। समझ में आया? निश्चय और व्यवहार। स्वरूप का सेवन करना आनंद का निश्चय आराधन, साथ में विकल्प का अशुभ टलकर (शुभ) आया, उस विकल्प को व्यवहार आराधन कहने में आता है। आराधन है नहीं। नवरंगभाई!

ऐसे यम। यम दो प्रकार का। वह महाव्रत है न? एक निश्चय महाव्रत और एक व्यवहार महाव्रत यम। अंतर का स्वरूप में वीतराग परिणति होकर स्वरूप में लिपट जाना वह निश्चय महाव्रत है और पंच महाव्रत का विकल्प उठते हैं, वह निमित्त सहचर देखकर महाव्रत का आरोप दे दिया है। वह महाव्रत है नहीं, उसको महाव्रत कहना वह व्यवहार है। समझ में आया? राजमलजी! दो प्रकार समझे?

ऐसे दया का दो प्रकार। एक निश्चयदया, एक व्यवहारदया। कथनी दो प्रकार की, यथार्थ में दया एक प्रकार की। राग की उत्पत्ति न होना, पुण्य और पाप का विकल्प भी उत्पन्न न होना और आत्मा की अरागी परिणति उत्पन्न होना वह निश्चय से अहिंसा दया है। साथ में पर जीव को न मारने को जो विकल्प उठता है वह निमित्त सहचर देखकर आरोप से दया कहने में आया है। वह वास्तव में दया नहीं है। राग, वह हिंसा है। ओहो..! पर जीव को मैं न मारुँ वह राग हिंसा है। इस हिंसा को अहिंसा के साथ निमित्त देखकर दया कहना वह आरोप से कथन है। बहुत कठिन भाई! समझ में आया?

यह सिद्धांत ले लेना---'**निश्चय-व्यवहार का सर्वत्र ऐसा ही लक्षण है।**' सर्वत्र जैनशासन चारों अनुयोग में कथनी चलती है, सच्चा वह निश्चय, आरोपित सहचर को व्यवहार कहते हैं। सर्वत्र ऐसा लक्षण है। ऐसे टोडरमल ने कितना अंतर का रहस्य खोला है! (तो कहते हैं), नहीं, वह प्रमाणिक नहीं है। हमारी दृष्टि अनुसार हो तो प्रमाणिक। भगवान! क्या करे? तेरी भी महिमा इतनी है कि अनंत तीर्थंकर आये तो

भी तू समझ नहीं। इतनी तेरी अशुद्धता भी बड़ी और तेरी शुद्धता भी बड़ी। प्रतिकूलता का गंज आवे तो भी एक अंश प्रतिकूलता का विचार न करे। परमानंद में रहनेवाला ऐसी भी तेरी बड़ी शुद्धता है। समझ में आया?

समिति आया न? प्रतिक्रमण। प्रतिक्रमण का दो प्रकार--निश्चय और व्यवहार। निश्चय प्रतिक्रमण, सच्चा प्रतिक्रमण, अनारोपित, अनौपचारिक प्रतिक्रमण शुभ और अशुभ भाव से हटकर स्वभाव में वीतरागता की परिणति हटकर करना वह निश्चय प्रतिक्रमण। साथ में विकल्प उठना, मिच्छामि दुक्कडम् ऐसा दोष हुआ, उस राग को निमित्त सहचर देखकर उपचार से उसको व्यवहार कहने का व्यवहार है। क्या? व्यवहार प्रतिक्रमण पुण्यबन्ध का कारण है, निश्चय प्रतिक्रमण है वह मोक्ष का कारण है। संवर और निर्जरास्वरूप है। कथन दो प्रकार की चले, वस्तु दो प्रकार की नहीं (है)। सामायिक दो प्रकार की। पोपटभाई! वह सब गये? सामायिक दो प्रकार की। क्या है शेठी? जयपुर में दो प्रकार की सामायिक सुना था? बड़ा शहर है दिगंबर का तो। तीन हजार घर है। लो, ये आप के कहते हैं।

सामायिक दो प्रकार की। एक--अपना स्वरूप अखण्ड शुद्ध, उसमें समताभाव निर्विकल्प से परिणति कर ध्यान में रहना वह निश्चय सामायिक है। उसके साथ विकल्प उठे शुभ राग का (कि) मैं सामायिक करुँ, सामायिक है नहीं ऐसा विकल्प, उसको व्यवहार से निमित्त देखकर उपचार से सहचर देखकर सामायिक कहा। सामायिक है नहीं। विकल्प में सामायिक है नहीं। आहाहा..!

मुमुक्षु :-- ...

उत्तर :-- अपनी सुनने की लायकात नहीं थी तो मिला नहीं, ऐसी है न बात तो। हैं? शेठी! अपनी सुनने की लायकात हो तो ऐसा सत्य मिले बिना रहे नहीं। बात तो ऐसी है। धन्नालालजी! सामायिक.. हैं? बात तो ऐसी है। फिर निमित्त का दोष निकालना कि हमें ऐसा मिला नहीं तो क्या करे? वह तो सब कथनी व्यवहार की है, परमार्थ नहीं। तेरी पात्रता और समझने की योग्यता हो (तो) तीर्थंकर उपस्थित हो, तीर्थंकर का समवसरण उपस्थित हो। समझ में आया? कहाँ से कहाँ तीर्थंकर आते हैं। आज समवसरण आया, आहा..! उसकी पात्रता हो तो कुदरती ऐसा निमित्त आ जाता है। आये बिना रहता नहीं। पराधीन नहीं, यहाँ होना है तो आना है ऐसा नहीं। समझ में आया? आहा...! जगत का कोई निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध सहज (है)। अपनी उपादान योग्यता में ऐसा न हो तो न मिले, अपने कारण से है।

प्रतिक्रमण आदि। सामायिक, भगवान की स्तुति। स्तुति का दो प्रकार। स्तवान आता है न? सामायिक, प्रतिक्रमण आदि आता है न? श्रावक का (षट् आवश्यक)। चोवीसन्तु।

स्तवन का दो प्रकार। राग रहित--विकल्प रहित, पुण्य-पाप रहित अपने स्वरूप की स्तुति करके एकाग्र रहना उसका नाम निश्चयस्तवन और चौबीस तीर्थंकर आदि का स्तवन करना विकल्प से वह व्यवहार स्तवन (है)। स्तवन दो प्रकार का कथन है, यथार्थ में स्तवन एक प्रकार का है। बाबुभाई! बराबर है यह? सामायिक के बाद? वंदन, वंदन।

वंदन का दो प्रकार। अपनी वंदना करना अन्दर में आनंदकंद में घूसकर निर्विकल्प वंदना करना वह निश्चयवंदना है। गुरु को वंदना करना वह विकल्प है, व्यवहार वंदना है। समझ में आया? वंदना है नहीं उसको वंदना कहना उसका नाम व्यवहार है। जगत की विचित्रता उसके सामने यह दलील,.. बहुत कठिन। सामायिक, चउविसंत्तु, वंदना, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग और प्रत्यख्यान।

प्रत्याख्यान का दो प्रकार। भगवान आत्मा अपने स्वरूप में शुद्धता का आनंद के स्वाद में घुम जाये, डोले अन्दर आनंद में उसका नाम निश्चय प्रत्याख्यान (है)। विकल्प उठा कि मैं प्रत्याख्यान करुँ कि ऐसा प्रत्याख्यान मैंने किया ऐसा राग उठे वह व्यवहार प्रत्याख्यान आरोपित है। नवरंगभाई! लो, नवरंगभाई को थोड़ा था।

ऐसे संयम का दो प्रकार--निश्चयसंयम और व्यवहारसंयम। समझ में आया? मोक्षमार्ग प्रकाशक में ऐसे बहुत बोल है, एक बार लिख लिये थे, पुरा पन्ना है। बहुत वर्षों पहले के। नियमसार में पद्मप्रभुमलधारीदेव ने सब बोल लिये हैं। जैनशानस का निश्चय के और व्यवहार के कितने प्रकार, बहुत ले लिये हैं। उसमें था, बहुत वर्ष पहले की बात है। संयम। इन्द्रिय दमन का विकल्प वह राग है। अतीन्द्रिय आनंद में घुसकर अव्रत का विकल्प उठना नहीं, पाँच इन्द्रिय का विकल्प उठना नहीं, मन में नहीं, छ काय की हिंसा का नहीं, अपने स्वरूप में आनंद की धारा उठनी, सम्यक् प्रकार से यम, वह निश्चयसंयम है। और छ काय की दया का विकल्प आदि उठते हैं वह व्यवहारसंयम आरोप से कहने में आया।

ऐसे आचार। ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, वीर्याचार, तपाचार। समझ में आया? नवरंगभाई को ऊतारने का मन हुआ, इसमें बहुत आया। समझ में आया? क्या? आचार। ज्ञानस्वरूप में अन्दर आचार-वर्तन करना वह निश्चय ज्ञानाचार (है) और समय पर विनय पढ़ना ऐसा विकल्प उठता है वह व्यवहार ज्ञानाचार (है)। है नहीं उसको कहना उसका नाम व्यवहार। आहाहा..! समझ में आया?

वैसे दर्शनाचार। सम्यग्दर्शन का निःशंकादि आठ गुण निर्विकल्प निश्चय में परिणति होना वह निश्चय सम्यग्दर्शन का आचार। निःशंक आदि शंका नहीं करना आदि व्यवहार, समकित का आठ बोल है व्यवहार, वह व्यवहार आचार समकित का (है)। यथार्थ

में एक ही आचार है। उसकी कथनी दो प्रकार की चलती है। नवरंगभाई! आहाहा..! कितना स्पष्ट किया है उसने! धन्नालालजी! व्यवहार का भेद आते हैं न? बहुत प्रकार से किसी को...

ऐसे चारित्राचार। लेकिन चारित्राचार क्या? अपना स्वरूप में लीन होना आनंदकंद में, वह निश्चय चारित्राचार है। और उसमें पंच महाव्रत आदि का विकल्प उठते हैं, जो पाँच समिति, तीन गुप्ति तेरह प्रकार का शुभ राग वह व्यवहार आचार है। वह पुण्यबन्ध का कारण है, वास्तव में वह आचार मोक्ष का कारण है नहीं। निमित्त को सहचर देखकर उपचार से कहने में आया है। उन्होंने ऐसा कहा है ऐसा नहीं, कुन्दकुन्दाचार्य ने कहा है कि व्यवहार अभूतार्थ है। ये जितने बोल कहे वह सब व्यवहार अभूतार्थ है, निश्चय भूतार्थ है। समझ में आया? टोडरमल ने कहा (ऐसा पंडित लोग कहते हैं)। नहीं, टोडरमल ने नहीं कहा, सर्वज्ञों ने कहा है, कुन्दकुन्दाचार्य ने ११वीं गाथा में कहा। जितना भूतार्थ यथार्थ निश्चय अपनी निर्विकल्प परिणति (है वह यथार्थ)। साथ में अभूतार्थ राग है वह वास्तविक समिति नहीं, गुप्ति नहीं, समझ में आया? चारित्राचार नहीं, दर्शनाचार नहीं परन्तु निमित्त देखकर सहचर से आरोप कहने में आया है। समझ में आया?

वैसे तपाचार। तप तो अन्दर, प्रतपंति विजयंति इति तपः। भगवान आत्मा की शुद्धता का विजय हो, शुद्धता का विजयपताका फरके अन्दर में निर्विकल्प धारा की उसा नाम सच्चा तप (है)। बीच में विकल्प आता है--मैं उणोदरी करुँ, मैं अनशन करुँ, मैं ... करुँ, यह करुँ, वह करुँ... करुँ माने छोडुँ आदि विकल्प, उसको व्यवहार तप कहते हैं। वह व्यवहारतप तप है नहीं, अभूतार्थ तप है। और भूतार्थ तप तो एक ही है। समझ में आया?

ऐसा वीर्याचार। वीर्य--जो अपना पुरुषार्थ स्वभाव सन्मुख होकर पूर्ण हो वह निश्चय वीर्याचार (है)। और भगवान की आज्ञा व्यवहार से लक्ष्य में लेकर वीर्य की स्फुरणा शुभ में वह व्यवहार वीर्याचार (है)। उसको सहचर देखकर व्यवहार वीर्याचार कहने में आया है। कहो, समझ में आया? ज्ञान, अनुष्ठान सब में लेना। प्रत्याख्यान मोक्ष की सीढी। ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप आदि। मंगलिक, उत्तम, शरण का दो प्रकार। समझ में आया? धरमचंदजी! यह धरमचंद की बात चलती है। धर्म का किरण। शीतल किरण चंद्र होता है न? शीतल किरण।

कहते हैं कि, भगवान! एक बार सुन। क्या? मंगल, मंगल। मंगल की कथनी दो प्रकार की, मंगलिक एक प्रकार का। ऐसे तो शास्त्र में बहुत आये, नाम मंगलिक, स्थापना मंगलिक, द्रव्य मंगलिक, क्षेत्र मंगलिक, काल मंगलिक, भाव मंगलिक। धवल

में आता है। कहते हैं, कथनी दो प्रकार की। मंगल--पुण्य-पाप का नाश होकर मम नाम पाप, गल नाम गलना, पाप शब्द से पुण्य और पाप दोनों भाव, वह गलकर आत्मा की धारा, हिमालय पर्वतमें से जैसे पर्वत में ठंडा झरना झरता है, वैसे भगवान हिमालय चैतन्यमूर्ति उसमें एकाग्र होकर शीतलता झरे, उसको मंगल कहते हैं। अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, केवलीपण्णत्तो धम्मो मंगलं... पर तरफ का लक्ष्यवाला शुभराग वह व्यवहार मंगलिक है। प्राणभाई!

उस प्रकार शरण। अरिहंता शरणं, सिद्धा शरणं व्यवहार का विकल्प है। अपना स्वरूप का शरण निश्चयशरण है। समझ में आया? अपना उत्तम पदार्थ, उसका आश्रय करके निर्विकार होना वह उत्तम है। बीच में राग आता है, भगवान का स्मरणादि वह व्यवहार उत्तम कहने में आता है। समझ में आया? मंगलिक शरण है.. तीन है न?

प्रायश्चित्त। प्रायश्चित्त का दो प्रकार। समझ में आया? नियमसार में आया था, नियमसार में बहुत बोल लिये हैं, बहुत बोल लिये हैं। नियमसार पर्याय का ग्रंथ है न, मोक्षमार्ग का ग्रंथ है न, तो पर्याय जितनी निर्मल है न, उसका बहुत लिया है। उसके साथ विकल्प है उसको व्यवहार (कहते हैं)। उसका मज़ाक किया है टीकाकार ने। व्यवहार का मज़ाक, क्या है? क्या है? निश्चय है वही सत्य एक बात है। बाद में विकल्प आदि आता है उसको उपचार से कहने में आता है। व्यवहार, उपचार है कि नहीं? लेकिन कौन ना कहता है? उपचार है न? यथार्थ नहीं।

मुमुक्षु :-- दोनों एक हो जाये?

उत्तर :-- उसका मतलब यथार्थ और उपचार एक हो जाये? चावल और बोरी एक हो जाये? समझ में आया? उसमें भी बहुत दृष्टान्त कहते हैं कि बोरी ठीक नहीं हो तो चावल गिर जाये, फलाना हो जाये, ढिकना हो जाये... ऐसे-ऐसे तर्क देते हैं न। कुतर्क करते हैं। अरे..! सुन न, उसको बोरी ही नहीं कहते। बोरी तो जो अखण्ड हो और चावल में निमित्तरूप पड़े उसको बोरी कहने में आता है। ... करके निकल जाये उसको निमित्त भी नहीं कहने में आता। समझ में आया? देवीलालजी! कहो, यह बैठता है कि नहीं? घर में भैया को बैठता है कि नहीं? वह मालूम नहीं, वह जिम्मेदारी नहीं।

मुमुक्षु :-- देरी लगेगी।

उत्तर :-- परन्तु यहाँ तो न्याय से तो बात चलती है। आठ वर्ष का बालक हो तो भी समझे कि यह बात ऐसे चलती है।

निश्चय स्वआश्रय से निर्मलानंद पर्याय होना यह सत्य है और उसके साथ राग की मंदता चले उसको व्यवहार उपचार करके कहा है। वह मार्ग-बार्ग है नहीं। क्यों,

वाड़ीभाई! बराबर होगा यह सब? क्या कहा?

प्रायश्चित्त का दो प्रकार। प्राय--ज्ञान उसमें एकाकार होकर विकार की उत्पत्ति न हो उसका नाम निश्चय प्रायश्चित्त है। विकल्प उठा, भगवान! मेरे पाप लगा, ऐसा लेना विकल्प, उस विकल्प को व्यवहार प्रायश्चित्त कहते हैं। कथन दो प्रकार का, वस्तु एक प्रकार की। समझ में आया?

ऐसे आलोचना। आलोचना का प्रकार दो। स्वरूप में स्थिर होकर आलोचना करना वह निश्चय, विकल्प से आलोचना करना कि अरे..! मुझे ऐसा पाप लगा था, ऐसा लगा, वह विकल्प व्यवहार। समझ में आया? समिति, शील, संयम सब लेना। शील-निश्चय और व्यवहार। ऐसे क्षमा निश्चय और व्यवहार। बिलकुल क्रोधरहित अपनी शांति की क्षमा अन्दर प्रगट करना। ये दस प्रकार का है न? दस प्रकार... क्या कहते हैं? पर्व? दसलक्षणीपर्व। उसमें उत्तम क्षमा एक धर्म है और विकल्प रहित क्षमा को उत्तम क्षमा कहते हैं। वह निश्चयक्षमा। और पर के अपराध को विकल्प से माफ करना वह व्यवहारक्षमा का आरोप उसमें आता है। समझ में आया? ऐसा सब है, लो। बहुत नाम दिये हैं उसमें।

अरे..! समाधि। समाधि का कथन दो प्रकार का। प्राणभाई! समाधि एक प्रकार की। चित्त समाधि होवे। अंतर में शांति समाधान, राग रहित अनाकुलता की समाधि वह निश्चयसमाधि। विकल्प उठता है यम, नियम आदि का विकल्प आता है, ऐसा शास्त्र में भी आता है, वह विकल्प--राग उठता है उसको व्यवहार समाधि कहने में आता है। यथार्थ में है नहीं। ऐसे नियम, इस प्रकार सब ले लेना। समझ में आया? निश्चय और व्यवहार। सेवा, बहुत भाषा डाली है।

मुमुक्षु :-- ..

उत्तर :-- मोक्ष का दो प्रकार--एक भावमोक्ष और द्रव्यमोक्ष। परमाणु का छूटना द्रव्यमोक्ष, पूर्णता की प्राप्ति वह भावमोक्ष। समझ में आया? लो। यहाँ आया, देखो!

'**क्योंकि निश्चय-व्यवहार का...**' यह सब बोल कहे न? सर्वत्र '**सर्वत्र ऐसा ही लक्षण है।**' चारों अनुयोग में कथन चला हो, जो सच्चा निश्चय स्वआश्रय कथन चला हो वह निश्चय और पर निमित्त या परद्रव्य आश्रय राग से कथन चला हो वह व्यवहार उपचार। उसका तो भान नहीं और हम निश्चय और व्यवहार दोनों का सेवन करते हैं। पुनः कुछ लोग ऐसा कहते हैं, सोनगढ़ में अकेला निश्चय है, हमारे निश्चय और व्यवहार दो है। अरे.. भगवान! तेरी बात... ऐसा कहते हैं, यहाँ अकेला निश्चय.. निश्चय.. निश्चय..। अपने निश्चय भी करना, व्यवहार भी करना। अरे..! करने में तेरा एक भी सच्चा नहीं, सुन न। कर्ताबुद्धि है, मैं राग को करुँ, वह तो मिथ्यादृष्टि है।

वहाँ निश्चय कैसा और व्यवहार कैसा? समझ में आया? हमें व्यवहार करना है, करना है, करना है। व्यवहार और राग मेरा कर्तव्य है और राग मुझे करना है, मैंने राग किया। मिथ्यादृष्टि है, व्यवहार और निश्चय है कहाँ तेरे पास? समझ में आया?

लेकिन अपने स्वरूप का अंतर अनुभव होकर प्रतीति और रमणता आंशिक हुई, उसके साथ जो विकल्प राग व्यवहार से अनुकूल देखकर, अनुकूल तो है नहीं, है तो प्रतिकूल, परन्तु व्यवहार अर्थात् कुदेव, कुगुरु, कुशास्त्र की जो श्रद्धा थी वह छूट गयी, अव्रत का परिणाम छूट गया, ... का ज्ञान न रहा, ऐसा निमित्त शास्त्र का ज्ञान, पंच महाव्रत का परिणाम, नव तत्त्व की (श्रद्धा), भगवान ने कहे नव तत्त्व, उसकी भेदवाली श्रद्धा का विकल्प सहचर देखकर निश्चयसम्यग्दर्शन के साथ में व्यवहार कहने में आता है। समझ में आया? मोक्षमार्ग... टोडरमल में ना? रहस्यपूर्ण चिट्ठी में है न?

व्यवहार समकित के साथ निश्चयसमकित गमनरूप--परिणमनरूप सदा होता है। ऐसा लिया है। रहस्यपूर्ण चिट्ठी। है न उसमें? हिन्दी है न, हिन्दी तो वाँचन के लिये रखा है। हमें तो गुजराती जमती है। समझ में आया? रहस्यपूर्ण चिट्ठी में है न? ३५०, देखो! '**परन्तु इतना जानना कि सम्यक्त्वी के व्यवहार सम्यक्त्व में व अन्य काल में अंतरंग निश्चयसम्यक्त्व गर्भित है...**' श्लोक का अर्थ है उसमें आखिर की पंक्ति। '**इतना जानना कि सम्यक्त्वी के व्यवहार सम्यक्त्व में व अन्य काल में अंतरंग निश्चयसम्यक्त्व गर्भित है, सदैव गमनरूप रहता है।**' है न? क्या कहते हैं? व्यवहार समकित का विकल्प तब उसको कहने में आता है कि साथ में निश्चय समकित परिणमन गमनरूप हो तो। अकेले व्यवहार को व्यवहार कहने में आता नहीं। समझ में आया? इसमें बहुत लिखा है। क्या कहा?

निश्चय और व्यवहार का सर्वत्र ऐसा ही लक्षण, लक्षण, लक्षणाभास निकलकर वह उसका लक्षण है। दूसरे का लक्षण है नहीं, दूसरे में अतिव्याप्ति, अव्याप्ति और असंभव दोष लगे वह लक्षण है ही नहीं। निश्चय-व्यवहार का लक्षण.. समझ में आया? जहाँ-जहाँ स्वद्रव्यआश्रय विकार रहित परिणति (हुई), वह सच्चा मोक्षमार्ग, सच्चा समता, सच्चा दर्शन इत्यादि (है)। साथ में विकल्प उठते हैं निमित्त का, वह व्यवहार प्रतिकूल नहीं.. क्या प्रतिकूल? कुदेव, कुगुरु, कुशास्त्र की अपेक्षा से, उस अपेक्षा से व्यवहार अनुकूल कहकर निमित्त कहा, निश्चच में तो स्वभाव की अपेक्षा से प्रतिकूल ही है। समझ में आया? कहते हैं कि प्रत्येक, आत्मा का जितना प्रकार निश्चय-व्यवहार का चला उसमें यह लक्षण लगा देना, यह लक्षण लगा देना। आगे-पीछे तुम्हारी कल्पना से लक्षण करना नहीं। कहो, समझ में आया?

'**सच्चा निरूपण सो निश्चय,...**' लो। सत्य का कथन चले चार अनुयोग में, द्रव्यानुयोग, चरणानुयोग, कथानुयोग, करणानुयोग... समझ में आया? सच्चा कथन चले जैसा है ऐसा, उसका नाम निश्चय। '**उपचार निरूपण सो व्यवहार...**' लेकिन उपचार कथन जो चले, आरोपित कथन चले, निमित्त का सहचर देखकर चले वह सब व्यवहार है। '**इसलिये निरूपण-अपेक्षा दो प्रकार मोक्षमार्ग जानना।**' लो, कथन की अपेक्षा से। निरूपण यानी कथन ना? आप पहले निरूपण-निरूपण बहुत बोलते थे, इसलिये पंडित निरूपण बोलते हैं तो निरूपण करना। इसमें निरूपण भाषा है न? पहले शुरूआत में आप ऐसा कहते थे। निरूपण की अपेक्षा से दो प्रकार। लेकिन इसमें निरूपण (कहा है), दूसरी भाषा तो करो, ऐसा मन में होता था, हाँ! कथन की अपेक्षा दो प्रकार। समझ में आया? '**निरूपण-अपेक्षा दो प्रकार मोक्षमार्ग जानना।**' कथन की पद्धति में दो प्रकार की कथन प्रमाणिका चलती है।

'**एक निश्चय मोक्षमार्ग है, एक व्यवहार मोक्षमार्ग है--इसप्रकार दो मोक्षमार्ग मानना मिथ्या है।**' देखो! ऐसे सब में बात ली न अपने। उसमें दोनों को मानना मिथ्या है, यथार्थ एक है। आहाहा..! वीतरागपना बताना है शास्त्र को, क्या बताना है? जिसमें जितना प्रकार अभी कहा उसमें वीतरागता वह सत्य है। उसमें रागादि आता है नहीं। वह उसकी विपरीत बात है, वह मोक्षमार्ग है ही नहीं। समझ में आया? एक निश्चय मोक्षमार्ग और एक व्यवहार मोक्षमार्ग, इसप्रकार दो हुए। एक-एक कहा न? एक निश्चय मोक्षमार्ग, एक व्यवहार मार्ग। एक-एक करके दो कहे। दो एका दो। एक और एक दो हुए न? ऐसा नहीं। ऐसा कहते हैं, देखो! '**एक निश्चय मोक्षमार्ग है, एक व्यवहार मोक्षमार्ग है...**' यह एक निश्चय मोक्षमार्ग है, यह एक व्यवहार मोक्षमार्ग है, ऐसा नहीं। मोक्षमार्ग तो एक ही है। दूसरा मोक्षमार्ग का तो आरोप से कथन उपचार से करने में आया है। समझ में आया? ऐसे दो मोक्षमार्ग (माननेवाला) मिथ्यादृष्टि है। शेठी!

'**तथा निश्चय-व्यवहार दोनों को उपादेय मानता है वह भी भ्रम है,...**' दो मार्ग मानना वह मिथ्यात्व है और दो को आदरणीय मानना भी मिथ्यादृष्टि है। समझ में आया? लो, मालूम नहीं, ऊपर जो कहे, जय महाराज! जय नारायण! समझ में आया? दुर्गादासजी! मालूम न हो और ऊपर से जो कहे, जय नारायण! हमारे शेठी भी ऐसा करते थे, हाँ! खबर न हो तो क्या करे? बड़ा खानदान है, बड़ा पुण्य है, लेकिन खबर विना क्या करे? जयपुर में रहे तो भी। क्या कहा? दो मोक्षमार्ग मानना भी मिथ्यादृष्टि है। मिथ्या का अर्थ मिथ्यादृष्टि नहीं होता है? मिथ्या माने असत्य, असत्य यानी मिथ्यात्वभाव। '**तथा निश्चय-व्यवहार दोनों को उपादेय मानता है...**'

देखो! निश्चय भी आदरणीय है और व्यवहार भी आदरणीय है, '**वह भी भ्रम है,...**' मिथ्यात्व है। समझ में आया? यह अधिकार हमारे दुलीचंदजी और हेमराजजी ने माँगा था। जरूरी था। उसके कारण यहाँ क्लास को भी बराबर सुनने में आवे। समझ में आया?

कहते हैं कि निश्चय-व्यवहार दोनों को उपादेय माने... भैया! व्यवहार भी आदरणीय है, निश्चय भी आदरणीय है। व्यवहार से व्यवहार आदरणीय है ऐसा कहने में आता है। निश्चय से आदरणीय नहीं है, जानने लायक है। व्यवहार जानने लायक है, निश्चय आदरने लायक है, क्योंकि दोनों नय में विरोध है। बहुत गड़बड़ भाई! धन्नालालजी!

मुमुक्षु :-- ..

उत्तर :-- ठीक कहा। दूसरी भाषा से कहें तो व्यवहार लौकिक मार्ग है। वह द्रव्यसंग्रह में आया है। क्या कहा है? लोकोक्ति। द्रव्यसंग्रह में आया, लोकोक्ति। उसका नाम व्यवहार। परमार्थ लोकोत्तर। लोकोक्ति व्यवहार है सही, है उसकी भूमिका योग्य (परन्तु) आदरणीय नहीं, मोक्षमार्ग नहीं। वह व्यवहार जितना कहा, समिति आदि सब, वह संवर नहीं, वह गुप्ति नहीं, निर्जरा नहीं। बन्ध की पर्याय को उपचार से मोक्षमार्ग, समता, सामायिक, प्रतिक्रमण आदि कहना, लेकिन वह (भी) निश्चय हो तो।

मुमुक्षु :-- व्यवहार से आदरणीय..

उत्तर :-- व्यवहार से आदरणीय का अर्थ क्या? अर्थ क्या? कि है। अशुभ टलकर ऐसा (शुभ भाव आता है)। टलकर भी, कथन की पद्धति ऐसी है, क्या करे? टले क्या, उस समय में ऐसा होता है। लेकिन वह तीव्र न हुआ उस अपेक्षा से वह जानने लायक उपादेय है। जानने के लिये उपादेय है, आदरने के लिये नहीं। समझ में आया? वह कहेंगे।

'**निश्चय-व्यवहार का स्वरूप तो परस्पर विरोधसहित है।**' निश्चय, व्यवहार से विरुद्ध, व्यवहार, निश्चय से विरुद्ध। दो मार्ग भी कैसे चले? और दो उपादेय भी कैसे चले? उसकी व्याख्या विशेष करेंगे...

(श्रोता :-- प्रमाण वचन गुरुदेव!)